पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र जीवन

मौलाना अबुल कलाम आजाद

हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पवित्र जीवन के तीन हिस्से कर लिये थे। एक अल्लाह की इबादत के लिये, दूसरा आम जनता के लिये और तीसरा अपनी ज़ात के लिये लेकिन हक़ीक़त यह है कि जो हिस्सा आम जनता के लिये था वह भी अल्लाह की इबादत ही था और जो हिस्सा अपनी ज़ात के लिये था वह गालिबन (संभवतः) सबसे कम था इसे भी अल्लाह की इबादत समझना चाहिए। इसलिये कि इससे भी यही दिखाना मकसद था कि अल्लाह के नेक बन्दे की जीवन शैली क्या होनी चाहिए और इसे क्योंकर पूरा किया जा सकता है।

आदत शरीफ यही थी कि सुबह की नमाज़ से फारिग हो जाते तो मस्जिद ही में तशरीफ रखते। वहीं लोग पास आ बैठते। इस मज्लिस (सभा) में मवाइज़ व नसायह (उपदेश) भी फरमाते, लोगों के खुवाबों का मतलब भी बताया जाता। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसललम अपना कोई खुवाब भी सुनाते। हंसी खुशी की बातें भी होतीं, कविताएं भी पढ़ी जातीं, कुछ दिन चढ़ जाता तो चाश्त की चार या आठ रकअतें पढ़ते। फिर खान-ए मुबारक (घर) तशरीफ ले जाते। वहां पहुंच कर कोई कपड़ा फटा होता तो सी लेते, जूता टूट जाता तो गांठ लेते, बकरी को दूह लेते, सेवक को उसके काम में मदद देते। बाज़ार से ज़रूरी चीज़ खुद जाकर लाते, हर छोटे बड़े को सलाम में पहल फरमाते, बड़े छोटे, मालिक और गुलाम में कोई अन्तर न था। कोई मामूली सा व्यक्ति भी निमंत्रण (दावत) देता तो खुशदिली से मनजूर फरमा लेते और जो खाना सामने आता खा लेते। सेवक के साथ बैठ कर खाना खाते। आटा गूंधने में उसे मदद देते, घर की सफाई खुद कर लेते। अस्र की नमाज़ के बाद थोड़े थोड़े वक़्त के लिये तमाम बीवियों के यहां जाते, फिर जिस के यहां रात ठेहरने की बारी होती वहां तशरीफ ले जाते, तमाम बीवियां वहीं जमा हो जातीं, इशा तक यह संगत रहती, इशा की नमाज़ के बाद आराम फरमाते, बीवियाँ चली जातीं, इशा की नमाज़ के बाद बात चीत पसन्द नहीं फरमाते थे।

सोने से पहले मामूल था कि क़ुरआन की कोई सूरत ज़रूर पढ़ते फिर यह अलफाज़ पढ़ते ‘‘अल्लाहुम्मा बि-इस्मिका अमूतो व अहया’’ ऐ अल्लाह तेरा नाम लेकर मरता हूं और तेरा नाम लेकर जिन्दा होता हूं। यानी कि खुवाब (सोने को) मौत के समान करार दिया।

जागने के बाद फरमातेः अलहम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बादा मा अमातना व इलैहिन नुशूर ‘‘तमाम तारीफ अल्लाह के लिये है जिसने हमें मौत के बाद जिन्दा किया (यानी पहले सुलाया (फिर जगाया) और मौत के बाद जिन्दा होकर सबको उसी की तरफ जाना है’’।

कभी मामूली बिस्तर पर सो जाते, कभी खाल पर, कभी चटाई पर और कभी ज़मीन पर आराम फरमाते, मामूल (रूटीन) यह था दाहिनी करवट सोते और दायां हाथ रूख्सार मुबारक के नीचे रख लेते। शुरूआत में इतनी नमाज़ें पढ़ीं कि पैर में वरम (सूजन) आ गया। उस वक़्त तक आप के लिये क़्यामे लैल (रात की नमाज़) फर्ज थी जब यह क़्याम महज़ नफिल रह गया तो आप रात में ग्यारह रकातें पढ़ते। (रसूले रहमत-पृष्ठ ६६७-६६८)

मासिक
इसलाहे समाज
जनवरी 2020 वर्ष 31 अंक 1
जुमादल ऊला 1441 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् हक़

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये
- टोटल पेज 28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. पैग़म्बर मुहम्मद स० का पवित्र जीवन 2
2. समाज सुधार और उसका फल 4
3. कुरआन व हदीस का साइंसी चमत्कार 6
4. इस्लाम में वक़्त की कद्र व क़ीमत 7
5. अच्छा कर्म कामयाबी की ज़मानत 10
6. इस्लाम में अनाथों के अधिकार 13
7. ज़ुबान की हिफाज़त 16
8. अलहाज शराफत हुसैन वज़ीरी का इन्तेकाल 19
9. अलहाज वकील परवेज़ को सदमा 20
10. जमाअती ख़बर 21
11. प्रेस रिलीज़ 23
12. अच्छे कर्म से हालात बदलते हैं 25
13. सदाचार इस्लाम की रोशनी में 22
14. प्रेस रिलीज़ 27
15. अहजे हदीस कम्पलैक्स 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

समाज सुधार और उसका फल

नौशाद अहमद

दूसरों को ज्ञान देने से पहले स्वयं के लिये ज्ञान हासिल करना ज़रूरी है इसके बगैर किसी भी नेक मकसद का पाना संभव नहीं है। मिसाल के तौर पर कुछ लोग समाज में सुधार का काम करना चाहते हैं, समाज में विभिन्न प्रकार की बुराइयां पायी जाती हैं, किसी भी बुराई का सबब क्या है, क्यों लोग इस बुराई की तरफ बढ़ते चले जा रहे हैं, और किन हालात में इस बुराई की शुरूआत हुई और इस बुराई के अन्त और उन्मूलन के लिये क्या तरीका अपनाना होगा, यह वह बिन्दु और पहलू हैं जिनको खतम करने से पहले हर कोण से समझने की ज़रूरत है, पूरी पलानिंग की ज़रूरत है।

मान लिया जाए कि दुनिया में कुछ लोग एक धर्म और उसके मानने वालों के बारे में गलत फहमी का शिकार हैं, कुछ लोग चाहते हैं कि हमारे बारे में गलत फहमी दूर हो जाए, जाहिर सी बात है कि यह एक सकारात्मक सोच है और गलत फहमी बहर हाल बड़ी से बड़ी बुराई की जड़ बन जाती है और बनती रही है और इस समस्या को लेकर दुनिया के कुछ वर्ग चिंतित भी हैं जैसा कि संसार का इतिहास हमें यही बताता है कि किस तरह एक धर्म और उसके अनुयाइयों को बुरा बनाने का प्रयास किया जाता रहा है।

सबसे पहले ज़रूरी यह है कि जिस धर्म और उसके मानने वालों की जो गलत फहमी हम दूर करने जा रहे हैं उसके बारे में भरपूर मालूमात होनी चाहिए और हर प्रश्न का जवाब भी मालूम होना चाहिए, इसके लिये सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पहले धर्म की शिक्षाओं और उसके सिद्धांतों को जानने की कोशिश करें, उसके इतिहास पर कमाण्ड हासिल करें और वातावरण के अनुसार गलत फहमी को दूर करने के लिये जो भाषा या जुबान प्रचलित है उस पर भी भरपूर कुशलता प्राप्त करें और हर एतराज़ करने वाले को उसकी भाषा के अनुसार अच्छे अन्दाज़ में जवाब दें।

धर्म के मानने वालों के बारे में भी भली भांति ज्ञान होना चाहिए, होता यह है कि कुछ लोग एक पुस्तिका पढ़कर धर्म के मानने वालों को परखने लगते हैं, स्पष्ट है कि महज़ एक पुस्तिका से न तो किसी धर्म को पूरी तरह समझा जा सकता है और न उसके मानने वालों के बारे में फैसला किया जा सकता है।

इस्लाम की मूल शिक्षाओं का स्रोत कुरआन और हदीस की किताबें हैं, जिस में इस्लाम की शिक्षाओं और सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से बता दिया गया है। अब अगर इस्लाम को जानने के लिये कोई महज़ दस

पन्नों की कोई पुस्तिका या बुकलेट पढ़ता है तो निसन्देह वह इस्लाम की शिक्षाओं को पूरी तरह नहीं समझ सकता यहीं से गलत फहमी की शुरूआत होती है।

रही बात धर्म के मानने वालों की, तो यह बात किसी संकोच के कही जा सकती है कि किसी धर्म के कुछ अनुयाइयों के गलत कर्मों, उनकी गलत गतिविधियों के आधार पर पूरे समुदाय को आरोपी नहीं ठेहराया जा सकता है। इसलिये किसी भी ध ार्म के बारे में पूर्णरूप से और सहीह तरीके से जानने और उसके असल स्रोत की तरफ जाना चाहिए केवल सुनी सुनाई बातों से किसी भी धर्म के बारे में कोई फैसला कर देना न्यायोचित नहीं है हर सुनी सुनाई बातों और अफवाहों पर टिप्पणी करना बुद्धिमानी की बात नहीं है इसलिये इन्सान की हैसियत से हम सब की जिम्मेदारी बनती है कि हम एक दूसरे को समझने और झूठे प्रोपैगण्डे का शिकार न हो कर असल सच्चाई जानने की कोशिश करें क्योंकि गलत फहमी हमेशा इन्सान को ऐसी दिशा में ले जाती है जहां से वापसी के तमाम रास्ते बन्द हो जाते हैं, जो लोग गलत फहमी फैलाकर हमें दिशाहीन बनाने का प्रयास करते हैं उनसे सचेत रहने की ज़रूरत है, इसी में पूरी मानवता, देश और समाज की भलाई है और अम्न व शान्ति का आधार भी यही है। सुधार के काम का फल उसी वक़्त मिलेगा जब हमारे अन्दर से एक दूसरे के बारे में गलत फहमी खतम होगी इस लिये ज़रूरी है कि हम एक दूसरे को अच्छी तरह से समझने की कोशिश करें, एक दूसरे के धार्मिक मर्यादाओं का सम्मान करें, भारत का संविधान भी हमें यही सिखाता है और अम्न व शान्ति, सौहार्द और सदभावना का आधार भी यही है।

इस्लाम ने अफवाह और झूठी खबरों से दूर रहने और बचने का आदेश दिया है, जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया हैः ''ऐ मुसलमानो! अगर तुम्हें कोई फासिक ख़बर दे तो तुम इस की अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो ऐसा न हो कि नादानी में किसी कौम को दुख पहुंचा दो फिर अपने किए पर पशेमानी (पछतावा) उठाओ'' (सूरे हुजुरात-६)

इस आयत में एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत बताया गया है जिस की व्यक्तगत और सामूहिक तौर पर बड़ी अहमियत है हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि उसके पास जो भी खबर या सूचना आए खास तौर से चरित्रहीन, फासिक़ किस्म के लोगों की तरफ से, तो पहले इस की छानबीन की जाए ताकि गलत फहमी में किसी के ख़िलाफ कोई कार्रवाई न हो।

इसलिये ज़रूरत इस बात की है कि हम प्रोपैगण्डों और अफवाहों से दूर रहें और दूसरों को भी झूठी खबरों और अफवाहों से बचाने की कोशिश करें हर मामले में अपनी राय ज़ाहिर करने से बचें यही हिकमत और अकलमन्दी का तकाज़ा है। और इसी में सबकी भलाई और भायदा है सुधार का काम झूठी बातों और अफवाहों के आधार पर नहीं होता है। कानून और धर्म के सिद्धांतों का पालन करने में हर इन्सान की भलाई है। इस हकीक़त का एहसास सबको होना चाहिए।

❑ ❑ ❑

कुरआन व हदीस का साइंसी चमत्कार

असूअद आजमी, वाराणसी

इस्लाम धर्म तमाम इन्सानों और जिन्नों के लिये अल्लाह का आख़िरी और पसन्दीदा दीन है। क़्यामत तक यह दीन बाक़ी रहे गा और हिदायत व रहनुमाई के लिये काफी होगा। इस दीन का आधार पवित्र कुरआन और हदीस पर है। दीन की बक़ा और हिफाज़त का मतलब कुरआन व हदीस की बक़ा और हिफाज़त है। इस हिफाज़त की जिम्मेदारी अल्लाह ने ली है। साढ़े चौदह सौ साल गुज़रने के बाद भी कुरआन और हदीस शब्दशः और अक्षरशः महफूज़ हैं और इसी तरह क़्यामत तक महफूज़ रहेंगे। यूं तो इस दीन की हक़्क़ानियत (सत्यता और सच्चाई) के प्रतीक और तर्क बेशुमार हैं लेकिन कुरआन व हदीस की तालीमात जो चमत्कारी पहलू लिए हुई हैं वह अक़्ल, सूझ बूझ और शुद्ध हृदय रखने वालों के लिये ख़ास प्रकार के आकर्षण रखती हैं। वर्तमान समय में जब कि इल्मी और साइंसी तरक़्क़ी चरम पर है और नये नये रहस्योदघाटन का असीमित सिलसिला जारी है। साइंसदां वर्षों के रिसर्च के बाद किसी नतीजे पर पहुंचते हैं और किसी नई खोज को सामने लाते हैं तो उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रहती जब उन्हें आगाह किया जाता है कि कुरआन व हदीस में तो डेढ़ हज़ार साल पहले से यह चीज़ मौजूद है इसलिये जो उनमें निष्पक्ष होते हैं वह अपने आपको दीने हक़ के हवाले कर देते हैं और पूरी उमर इस दीन के खादिम बने रहते हैं। अल्लाह ने कुरआन के अवतरण के वक़्त फरमा दिया था ''अनकरीब (जल्द ही) हम उन्हें अपनी निशानियां आफ़ाक़ (क्षितिज) में दिखा देंगे और उनके अपने नफ़्स में भी, यहां तक कि उन पर स्पष्ट हो जाएगा कि यह कुरआन वाकई बरहक़ (सत्य) है क्या यह बात काफी नहीं कि तेरा रब हर चीज़ का शाहिद है''। (सूरे फ़ुस्सिलत-५३) कुरआन और हदीस के चमत्कार के भी विभिन्न पहलू हैं जिनमें एक पहलू साइंसी चमत्कार का है। जिस का अर्थ यह है कि अल्लाह की किताब में या रसूल की सुन्नत में संसार से संबन्धित कोई ठोस हक़ीक़त मौजूद हो और वैज्ञानिकों ने अनुभव के ज़रिए इस हकीकत तक पहुंच हासिल की हो। इस बारे में कुछ ओलमा आशंकाओं का भी इजहार करते हें लेकिन हक़ीक़त यह है कि जिन शंकाओं या सन्देहों का इजहार किया जाता है उनके बारे में अगर सावधानी बरती जाए और अतिशयोक्ति से परहेज किया जाए तो कुरआन व हदीस के साइंसी चमत्कार के ज़रिए दीन की बहुत कुछ खिदमत की जा सकती है। यही वजह है कि ओलमा और शोधकर्ता इस तरफ विशेष ध्यान दे रहे हैं। इस पर चर्चा, शोध एवं रिसर्च के लिये अकेडमियां स्थापित की जा रही हैं, सेमीनार और कांफ्रेन्सें हो रही हैं और एक बड़ी तादाद इस रास्ते से इस्लाम से परिचित हो रही है या इसके छत्र छाया में शरण ले रही है।

लेखकः डा० मुहम्मद अहमद लौह

अनुवादः अब्दुल मन्नान शिकरावी

इस्लाम में वक़्त की क़द्र व क़ीमत

देखा जाता है कि लोग अपने वक़्त को ऐसे कामों में लगाते हैं और उमर ऐसे कमों में बर्बाद कर देते हैं जिनका उन्हें कोई फायदा हासिल नहीं होता। यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि गुज़रते दिनों और बीतते समय पर ऐसे लोग कितना मगन हैं जब कि यह भूले हुए हैं कि उनकी जिन्दगी का गुज़रने वाला हर मिनट और हर क्षण उन्हें कब्र और परलोक से करीब कर देता है।

वक़्त ही का दूसरा नाम जीवन है और यही इन्सान की असली उमर है। जब वक़्त की हिफाज़त हर भलाई की बुनियाद और वक्त की बर्बादी हर बुराई की जड़ है तो ज़रूरी हो जाता है कि हम लोग जिन्दगी में वक़्त की कीमत को समझें। सवाल यह है कि वह कौन से कारण और उपाय हैं जो वक़्त की हिफाज़त में लाभाकारी हो सकते हैं? कैसे हम अपने वक़्त को ज़्यादा से ज़्यादा लाभाकारी बना सकते हैं? इन सब पहलुओं पर थोड़ी देर के लिये गौर किया जाए।

वक़्त के बारे में विभिन्न पहलुओं से इस्लाम ने ध्यान अकार्षित कराया है। अललाह ने कुरआन की विभिन्न सूरतों में वक़्त की कसम खाई है जिससे वक़्त की अहमियत का पता चलता है और इस बात पर जोर दिया गया है कि वक़्त को अल्लाह की इबादत के लिये ग़नीमत जानना चाहिए। अल्लाह ने अपनी सृष्टि में से किसी की क़सम (सौगन्ध ा) खाता है तो इससे उसकी अहमियत का पता चलता है और इसका असल मकसद उसके लाभ से अवगत कराना होता है।

क़्यामत के दिन इन्सान से वक़्त के बारे में पूछा जाए गा। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क़्यामत के दिन इन्सान के कदम चार चीज़ों के बारे में सवाल का जवाब दिए बगैर हिल नहीं सकें गे। उमर के बारे में कि उसने अपनी उमर को कहां खर्च किया? जवानी के बारे में कि उसने अपनी जवानी को कहां खपाया, माल के बारे में कि उसने माल को कहां से कमाया और कहां खर्च किया और इल्म के बारे में कि उसने अपने इल्म पर कहां तक अमल किया? (तिर्मिज़ी)

अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात की भी खबर दी है कि वक़्त सृष्टि के लिये अल्लाह की नेमतों में से एक महत्वपूर्ण नेमत है इसलिये इन्सान के लिये ज़रूरी है कि वह इस नेमत का शुक्रिया अदा करे वर्ना यह नेमत छीन ली जाएगी और ख़तम हो जाएगी। वक़्त की नेमत को अल्लाह की एताअत व फरमांबरदारी (अनुसरण) में स्तेमाल किया जाए और ज़्यादा से ज़्यादा नेकियां की जाएं। अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो नेमतें ऐसी

हैं जिनमें अधिकतर अपना नुकसान करते (गफलत में रहते) हैं। एक तन्दुरूस्ती और दूसरा खाली वक़्त। (बुखारी)

इमाम इब्नुल कैइम रह० वक़्त की कद्र व कीमत और अहमियत के बारे में लिखते हैं :

''इन्सान का वक़्त हकीकत में उसकी उमर ही है। यह दुनिया की जिन्दगी तो बादलों की तरह आनी जानी है फिर जिस का वक़्त अल्लाह के लिये और उसके फरमान के मुताबिक गुज़रेगा तो उस पर सहीह मानों में जिन्दगी का इतलाक़ (अनुप्रयोग) होगा। वर्ना सब बेकार और व्यर्थ है''।

इमाम इब्नुल जौजी रह० फरमाते हैं इन्सान के लिये मुनासिब है कि वह वक़्त की कद्र करे। इसका एक क्षण भी किसी ऐसे काम में खर्च न हो जिससे अल्लाह की सामीप्ता प्राप्त न होता हो। कथनी व करनी में बेहतर से बेहतर का चुनाव करे। बगैर सुस्ती व काहिली के उसकी निय्यत और एरादा हमेशा भलाई के कामों के लिये होना चाहिए।

माल एक आनी जानी चीज़ है जिस तरह इन्सान अपने माल व दौलत की हिफाज़त करता है उसी तरह उसको अपने वक़्त का सहीह स्तेमाल करते हुए दीन व दुनिया दोनों के लिये स्तेमाल करे। हमारे असलाफ (पूर्वज) वक्त का बड़ा ख्याल रखते थे वह वक़्त का कोई भी लमहा बर्बाद नहीं होने देते थे वह वक़्त को लाभकारी इल्म को हासिल करने, नेक काम करने और दूसरों को फायदा पहुंचाने के लिये स्तेमाल करते थे। हज़रत हसन फरमाते हैं कि मैंने ऐसे लोगों को देखा है कि वह वक़्त का दीनार व दिरहम (माल व दौलत) से भी ज़्यादा ख्याल रखते थे।

वक़्त की पाबन्दी के सिलसिले में जरूरी यह है कि काम का एक शिडोल बना लिया जाए ज़रूरी और गैर ज़रूरी कामों की सूचि बनालें, इसका फायदा यह हो गा कि काम में रूटीन बाक़ी रहेगा। बाज़ बुजुर्गों का कहना है कि इन्सान के औक़ात (समय) चार तरह के हैं। नेमत, मुसीबत, फरमांबरदारी और पाप। जिस इन्सान का वक़्त अल्लाह की फरमांबरदारी (अनुसरण) में गुज़र जाए तो वह अल्लाह का एहसान माने कि अल्लाह ने उसको उसके आदेश पर चलने की क्षमता दी, जिसका वक़्त नेमत में गुज़रा तो वह इस पर अल्लाह का शुक्रिया अदा करे जिसका वक़्त नाफरमानी में गुजरे तो वह तौबा करे और जिस का वक़्त कठिनाइयों में गुज़रे तो वह सब्र का दामन थामे रहे।

किसी अरबी कवि ने कहा कि दिनों के गुज़र जाने पर हम खुशी का इजहार करते हैं जब कि हर गुज़रने वाला दिन उमर का एक हिस्सा है जो ख़तम हो गया।

हज़रत हसन बसरी रह० फरमाते हैं ऐ आदम की औलाद तू इसके सिवा कुछ नहीं कि तेरा वजूद दिनों का ही दूसरा नाम है। जब एक दिन गया तो तेरा एक हिस्सा चला गया, अल्लामा इब्नुल कैइम रह० फरमाते हैं वक़्त की बर्बादी मौत से भी ज़्यादा सख्त है क्योंकि वक़्त की बर्बादी अल्लाह तआला और आखिरत (परलोक) से तेरा रिश्ता तोड़ देती है इसी तरह मौत दुनिया और उसके वासियों से तेरा संबन्ध तोड़ देती है। हज़रत सिर्री बिन अल मुग्लिस फरमाते हैं अगर माल के नुकसान पर तुझे ग़म होता है तो उमर के नुकसान पर तो तुझे रोना चाहिए। (सफवतुस्सफवा)

फुर्सत के समय को अल्लाह की किताब को याद करने और उसको

सीखने में स्तेमाल कीजिए। एक मोमिन के लिये फराइज़ की अदायगी के बाद फुर्सत के लमहों को स्तेमाल करने के लिये यह सबसे बेहतर अवसर है। अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान है तुम में सबसे बेहतर वह है जो कुरआन को खुद सीखे और दूसरों को भी सिखाए।

असूलाफ (पूर्वज) अपने खाली वक़्त में इल्म हासिल करने के लिये चिंतित रहते थे। इसके कई तरीक़े हैं। महत्ववूर्ण पठन पाठन क्रिया में शामिल होना, फायदेमन्द कैसेट सुनना, लाभकारी किताबों का अध्ययन करना और इसी तरह से जो मसाइल मालूम नहीं हैं उनके बारे में ओलमा से मालूमात हासिल करना।

खाली वक़्त में अल्लाह को याद करना वक़्त का सबसे बेहतरीन स्तेमाल, सुनेहरा अवसर और आसान तरीन अमल है जिसमें न कोई माल ख़र्च होता है और न मेहनत मशक़्क़त करनी पड़ती है। अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने एक सहाबी (साथी) को इसी की शिक्षा दी थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिस्र बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक देहाती ने पूछा इस्लाम के अहकाम व कवानीन तो मेरे लिये बहुत हैं कुछ थोड़ी सी चीज़ें मुझे बता दीजिये जिस पर मैं मजबूती से जमा रहूं। आपने फरमाया तुम्हारी जुबान हर वक़्त अल्लाह की याद और जिक्र से तर रहे। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

अल्लाह की इबादत में अपने वक़्त को खर्च करने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम ज़्यादा से ज़्यादा नवाफिल का पढ़ना है। इसके अलावा फराइज़ को अदा करने में जो कोताही और कमी हो जाती है नवाफिल पढ़ने से इसकी भरपाई हो जाती है इसके अलावा बन्दे को इससे अल्लाह की मुहब्बत हासिल होती है। जैसा कि एक मशहूर हदीस कुदसी है :

''और बन्दा नवाफिल की अदायगी के माध्यम से मुझसे सामीप्ता हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं'' (बुखारी)

अल्लाह की तरफ बुलाना, भलाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना, इन्सानों की भलाई चाहना और अल्लाह की तरफ बुलाना नबियों (पैगम्बरों) का मिशन है इन सब कामों में अपना वक़्त लागना सबसे सुनेहरा और अच्छा अवसर है।

रिश्ते नाते जोड़ना जन्नत में जाने, रहमत के पाने, उमर में बरकत और रोज़ी में बढ़ोतरी का माध्यम है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो चाहता है कि उसकी रोज़ी में बरकत और उमर में बढ़ोतरी हो उसे चाहिए कि वह रिश्ते नाते को जोड़े रखे। (बुखारी)

नमाज़ों के बाद, अज़ान व तकबीर के बीच, आखिरी तिहाई रात, अज़ान की आवाज़ सुनते वक़्त, फज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक के सभी समय इबादत के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं जिनमें शरीअत ने इबादत की प्ररेणा दी है और इन इबादतों के माध्यम से बन्दा पुण्य हासिल कर सकता है।

वक़्त का सहीह स्तेमाल यह भी है कि मुसलमान अपने बचे हुए समय को लाभकारी महारत, भाषा सीखने और व्यवसाय को इस मक़सद से सीखने में लगाएं कि वह इससे अपने आप को और अपने देश बन्धुओं को फायदा पहुंचाएँगे।

❑ ❑ ❑

खुर्शीद आलम मदनी, पटना

अच्छा कर्म कामयाबी की ज़मानत है

इन्सान शरीर और आत्मा का संग्रह है। इसकी दो हैसियत होती है एक जिस्मानी और दूसरी रूहानी और यह दोनों बहुत सारे मामलों में संयुक्त हैं यानी जिस तरह इन्सान का जिस्म बीमार पड़ता है, उसे मर्ज होता है इसी तरह इन्सान की रूह (आत्मा) भी बीमार पड़ती है। जिस तरह इन्सान अपने जिस्म के मर्ज़ के एलाज के लिये भाग दौड़ करता है, तन्दुरूस्ती पाने के लिये दुनिया का चक्कर लगाता है और अपनी पूरी दौलत खर्च कर देता है इसी तरह अगर इन्सान की रूह (आत्मा) बीमार पड़ जाए तो इसके एलाज की भी चिंता करनी चाहिए। शरीर का उपचार करने वाला डा० मरीज़ का हमदर्द होता है वह किसी मरीज़ को झिड़कता और डांट कर भगाता नहीं है बल्कि पूरी हमदर्दी से अपने मरीज़ का एलाज करता है। वह कहता है कि आपने आने में देर कर दी है फिर भी मैं एलाज करने की पूरी कोशिश करूंगा और आप ज़रूर अच्छे हो जाएंगे। इसी तरह वह लोग जो रूहानी (आध्यात्मिक) बीमारी के डाक्टर हैं। धर्म के प्रचारक हैं, उन्हें भी पूरी भलाई के साथ अपने मरीज़ों का एलाज करना चाहिए, उनसे नफरत नहीं करनी चाहिए, उनके दिल को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए।

जिस तरह अच्छे आहार और खाना से शरीर सेहतमन्द रहता है उसी तरह अच्छे कर्मों से इन्सान की आत्मा तन्दुरूस्त और ज़िन्दा रहती है और जिस तरह अशुद्ध आहार से इन्सान के शरीर को बीमारी लग जाती है उसी तरह बुराई और हराम कामों से इन्सान की रूह बीमार पड़ जाती है। अल्लाह के अर्श के बाद जन्नत सबसे पवित्र जगह है इस पवित्र जगह में वही लोग जाएंगे जिन के कर्म और चरित्र अच्छे होंगे। यहां किसी कुकर्मी के जाने का सवाल ही नहीं पैदा होता है। यही वजह है कि अल्लाह तआला ने अपने नेक बन्दों की पवित्रता का बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया है ताकि उसके बन्दे उसके बनाए गए तर्बियती सांचे में ढ़ल कर और रूहानी तरक़्क़ी के स्टेजों से गुज़र कर साफ और पवित्र हो जाएं। अपने भविष्य को उज्जवल करलें और अल्लाह की जन्नत हासिल करलें इसलिये कि इन्सान इस दुनिया में जन्नत का मुसाफिर है।

ज़रा ग़ौर कीजिये अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर जितनी इबादतें फर्ज़ की हैं उनका सबसे बड़ा मक़सद बन्दे को गुनाहों से पाक व साफ करना है मिसाल के तौर पर हज के बारे में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस शख्स ने हज किया और हज के दौरान बुराई से महफूज रहा तो वह इस हालत में वापस होता है जैसे उसकी मां ने आज ही उसको जनम दिया है।

नमाज़ के बारे में फरमायाः पांच वक़्त की नमाज़ इन्सान के गुनाहों को धो देती है। (मुसनद अहमद)

रोज़ा इन्सान को बुराइयों से दूर रखता है और दिलों में तक़्वा परहेज़गारी पैदा कर देता है। रोज़ा ढाल है और रमज़ान का महीना गुनाहों को जला देता है। ज़कात और सदक़ात के बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया ''आप उनके मालों से सदक़ा लीजिए जिसके ज़रिए से आप उनको पाक साफ कर दें''। (सूरे तौबा-१०३)

इसी तरह अल्लाह तआला अपने बन्दों के सामने तौबा का दरवाज़ा खोल देता है ताकि वह तौबा करके पाक व साफ हो जाएँ और जन्नत में चले जाएँ। यह इन्सान के लिये अल्लाह की बड़ी नेमत है। तौबा बन्दा और रब का मामला है किसी इन्सान के पास जाने की ज़रूरत नहीं है। बन्दे से अगर कोई चूक हो गई या उसकी इबादतों में कोताही हो गई हो तो वह अल्लाह के सामने गुनाह को स्वीकार करके भविष्य में कोई पाप न करने का संकल्प करे ''करीब है कि अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा'' (सूरे तहरीम-८)

इसके अलावा कुछ सुनेहरे अवसर दिए हैं जिन में बन्दा चाहे तो अपने दामन में नेकियों को समेट ले। रब को खुश कर ले, जहन्नम से आजादी का परवाना हासिल कर ले और नेमतों भरी जन्नत का हक़दार बन जाए जिनमें हज और रमज़ान के दिन हैं। लेकिन अफसोस की बात यह है कि हम इन क्षणों में लाभान्वित होने की कोशिश नहीं करते, हमारे रूहानी और ईमानी जजबात कमजोर पड़ते जा रहे हैं, यह इबादतें हमारे अन्दर इस्लामी खूबियां, दीनी जजबा पैदा करना चाहती हैं लेकिन यह जजबा पैदा नहीं हो रहा है।

क्या रमज़ान में अल्लाह की तरफ से नाज़िल होने वाली रहमतों और बरकतों की शुक्रगुज़ारी का यही तरीक़ा है कि रमज़ान का महीना रूख़्सत होने के बाद ग्यारह महीने अल्लाह की इबादत से आज़ाद हो जाएं? क्या रमज़ान की इबादत हमारी निजात के लिये काफी है? या ईमान के साथ खातमा जरूरी है? क्या हमारे पास आने वाले रमजान तक जीवित रहने की गारन्टी है? और क्या मौत का फरिश्ता आने से पहले आप को बता देगा कि मैं आने वाला हूं कि मेरे आने से पहले तौबा कर लो वरना मेरे आने के बाद किसी की भी तौबा कुबूल नहीं होगी? कुछ लोग समझते हैं कि बस रमज़ान इबादत का मौसम है, जो नेकी करनी है वह रमज़ान ही में करलें, रमज़ान खतम इबादत खतम, मस्जिद की हाज़िरी खतम, नमाज़ की पाबन्दी खतम, क्या यह नमाज़ भी हमसे साक़ित (खतम) हो सकती है, यह तो एक ऐसी इबादत है जो हर शख्स पर हर हालत में फर्ज़ है, इस फरीज़े से छुटटी कभी नहीं लेकिन क्या यह हक़ीक़त नहीं है कि रमज़ान खतम होते ही हमारी मस्जिदें वीरान होने लगती हैं, क्या हम रमज़ान की इबादत करते हैं अगर उसकी इबादत करते हैं तो वह चला गया लेकिन अगर हम अल्लाह की इबादत करते हैं तो याद रखो कि वह शाश्वत जीवित है, उसे मौत नहीं आ सकती।

आप की इबादत रमज़ान में कुबूल हुई या नहीं, इसकी सबसे

बड़ी निशानी यह है कि अगर आप रमज़ान के बाद भी अपने नेक आमाल पर काइम हैं तो समझ जायें कि अल्लाह ने आपकी इबादत को कुबूल कर लिया है और इबादत की कुबूलियत की पहचान यह है कि अल्लाह ने इबादत को लगातार करने की क्षमता दी। इसलिये हमें रमजान की इबादत की कुबूलियत की दुआ मांगनी चाहिए क्योंकि असल चीज़ कुबूलियत है और यही हमारे पूर्वजों का तरीक़ा रहा है। इब्ने रजब हंबली ने अपनी किताब लताइफुल मआरिफ में लिखा है कि ''सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम छ महीने तक यह दुआ करते कि ऐ अल्लाह उन्हें रमज़ान में पहुंचा और फिर छः महीने यह दुआ करते कि रमज़ान की इबादतों को कुबूल फरमा ले''

याद रखें कि हम २४ घन्टे अल्लाह के बन्दे और गुलाम हैं और जिन्दगी की आखिरी सांस तक उसकी इबादत करनी है और आख़िरत के तमाम फैसले ईमान व अमल की बुनियाद पर किए जाएंगे। अपने हर अमल को कुरआन व हदीस की कसौटी पर तौल लीजिए। किसी काम को अगर मैं नेक कहूं और आप नेक समझें तो इससे वह नेक नहीं हो जाता जब तक कि वह शरीअत की मीज़ान (स्तर) पर पूरा न उतर जाए फिर वही निजात व कामयाबी का ज़रिया बन सकता है।

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

इस्लाम में अनाथों के अधिकार

अबू हमदान अशरफ

वह मासूम और नाबालिग बच्चा जिसके बाप का इन्तेक़ाल हो गया हो उसे यतीम (अनाथ) कहते हैं।

यतीम के साथ अच्छा व्यवहार करने और उन पर खर्च करने पर जोर के साथ जहां बहुत से अधिकारों को बयान किया गया है वहीं यतीमों के बारे में उनके अधिकारों का उल्लेख किया गया। पवित्र कुरआन की २३ आयतों में अनाथों के अधिकारों का वर्णन आया है। यहां पर कुछ आयतों का अनुवाद पेश किया जा रहा है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''और जब हमने बनी इस्राईल से वादा लिया कि तुम अल्लाह तआला के सिवा दूसरे की इबादत न करना और मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करना, इसी तरह कराबतदारों, यतीमों और मिस्कीनों के साथ और लोगों को अच्छी बातें कहना, नमाज़ें काइम करना और ज़कात देते रहा करना, लेकिन थोड़े से लोगों के अलावा तुम सब फिर गए और मुंह मोड़ लिया''। (सूरे बक़रा-८३)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''सारी अच्छाई पूर्व व पश्चिम की तरफ मुंह करने में ही नहीं बल्कि हकीकत में अच्छा वह शख्स है जो अल्लाह तआला पर, क़्यामत के दिन पर, फरिश्तों पर, अल्लाह की किताब पर और नबियों (पैग़म्बरों) पर ईमान रखने वाला हो, जो माल से मुहब्बत करने के बावजूद क़राबतदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफिरों और सवाल करने वाले को दे, गुलामों को आजाद करे, नमाज़ की पाबन्दी और ज़कात की अदायगी करे, जब वादा करे तब इसे पूरा करे, तंगदस्ती दुख दर्द और लड़ाई के वक़्त सब्र करे यही सच्चे लोग हैं और यही परहेज़गारी है'' (सूरे बक़रा-१७७)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''आप से पूछते हैं कि वह क्या खर्च करें? आप कह दीजिए जो माल तुम खर्च करो वह मां बाप के लिये है और मुसाफिरों के लिये है और तुम जो कुछ भलाई करो गे अल्लाह तआला को इसका इल्म है'' (सूरे बक़रा-२१५)

सहल बिन सअूद साइदी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैं और यतीम की किफालत (भरण-पोषण) करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे और आप ने अपनी शहादत (गवाही देने वाली) उंगली और बीच वाली उंगली के बीच कुशादगी की। (बुख़ारी)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जिसने किसी यतीम को अपने खाने और

पीने में शामिल कर लिया यहां तक कि वह मुहताज न रहे तो उसके लिये जन्नत वाजिब हो गई (मुसनद अबू यअूला, तबरानी, मुसनद अहमद, सहीहुत तरग़ीब-२५४३)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अपने दिल के सख़्त होने की शिकायत की तो आप ने फरमाया अगर तू अपने दिल को नर्म करना चाहता है तो मिस्कीन (गरीब) को खाना खिला और यतीम के सर पर (प्यार व मुहब्बत) से हाथ फेर (मुसनद अहमद २/२६३, अस्सहीहा-२/५३३)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ अल्लाह मैं लोगों को दो कमजोरों के हक़ में बहुत डराता हूं (उनके हक में कोताही न करना) एक यतीम और दूसरी औरत (सुनन इब्ने माजा-अस्सहीहा १०१५)

कुरआन में फरमायाः

"और यतीमों को उनके माल दे दो और पाक और हलाल चीज के बदले नापाक और हराम चीज़ न लो और अपने मालों के साथ उनके माल मिलाकर न खाओ बेशक यह बहुत बड़ा गुनाह है" (सूरे निसा-२)

फरमायाः "जो लोग नाहक़ जुल्म से यतीमों का माल खा जाते हैं वह अपने पेट में आग ही भर रहे हैं और अनकरीब वह दोज़ख़ में जाएंगे"। (सूरे निसा-१)

यतीमों के साथ पैगम्बर मुहम्मद और उनके साथियों का जो व्यवहार था इसको अल्लामा अलताफ हुसैन हाली ने अपनी कविता में इन शब्दों में उल्लेख किया है।

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादें गरीबों का बर लाने वाला
मुसीबत में गैरों के काम आने वाला
वह अपने पराये का गम खाने वाला
फकीरों का मलजा गरीबों का मावा
यतीमों का वाली गुलामों का मौला
खताकार से दरगुज़र करने वाला
बद अन्देश के दिल में घर करने वाला
मफासिद का जेरो ज़बर करने वाला
कबाइल को शेरो शुक्र करने वाला
उतर कर हिरा से सूए क़ौम आया
और इक नुस ख़ए कीमिया साथ लाया

इमरान बिन हुसैइन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हम लोग एक सफर में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे, हम सख़्त प्यासे थे, आपने हमें पानी की तलाश में भेजा हम पानी तलाश ही कर रहे थे कि हमें एक औरत नज़र आई जो दो मश्कों को लटकाए सवारी से जा रही थी, हमने उससे पानी के बारे में पूछा उसने कहा कि पानी यहां नहीं है, हमारे घर से एक दिन रात की दूरी पर है, हम लोगों ने उससे कहा कि हमारे पैगम्बर के पास चलो उसने कहा अल्लाह के पैगम्बर कौन हैं। हम लोग उस औरत को पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाए। औरत ने उपर्युक्त बातों के बाद कहा कि वह यतीम बच्चों की मां है। पानी के मश्कीज़े में पैगम्बर मुहम्मद ने बरकत की दुआ की हम चालीस लोगों ने जी भर कर पानी पिया और अपने तमाम मश्कीज़े को भर लिया लेकिन इसके बावजूद उस औरत के पानी

में कोई कमी नहीं हुई। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एलान किया कि जिन जिन लोगों के पास खाने पीने के सामान हैं सब इस औरत को दे दें। जब यह औरत अपने घर पहुंची तो उसने अपनी क़ौम से कहा कि आज मैं सबसे बड़े जादूगर से मिल कर आई हूं वह तो वास्तव में पैग़म्बर हैं जैसा कि उसकी कौम का ख्याल है फिर वह औरत इस्लाम ले आई और इसके ज़रिया इस औरत की कौम भी इस्लाम ले आई। (बुख़ारी)

इस वाक़ए में ग़ौर करने की बात यह है कि जब पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि यह औरत यतीम बच्चों की मां है तो आप ने इन बच्चों पर दया खाते हुए अपने सहाबा (साथियों) को इस औरत की मदद करने का हुक्म दिया जबकि आप और आपके प्यारे सहाबा सफर में थे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास एक औरत ने आकर कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन मेरे पति का देहान्त हो गया है और हमारे पास छोटी छोटी बच्चियां हैं इन बच्चों को खिलाने के लिये मेरे पास कुछ नहीं है और मैं खिफाफ बिन ईमा गिफारी की बेटी हूं, मेरे पिता हुदैबिया में शामिल थे। उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने यह सुनने के बाद इस औरत को एक तन्दुरूस्त ऊंट पर गल्ले के दो थैले और दूसरी चीज़ें देकर रवाना किया और कहा कि इसके खतम होने से पहले अल्लाह इससे बेहतर इन्तेजाम (प्रबन्ध) कर देगा। (बुखारी)

७ हिजरी में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उमरा के लिये मक्का गए और जब उमरा से वापस होने लगे तो हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बेटी ने ऐ चचा ऐ चचा पुकारते हुए पीछे से दौड़ते दौड़ते आई। हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस बच्ची को उठा लिया और फातिमा को दे दिया। इस यतीम (अनाथ) बच्ची के बारे में तीनों सहाबी यह कहने लगे कि इस यतीम बच्ची की देख भाल मैं करूंगा और हर एक करीबी रिश्ते का हवाला देने लगे। आखिरकार आपने बच्ची को जाफर बिन अबू तालिब के हवाले कर दिया क्यों कि बच्ची की खाला उनके निकाह में थीं और आप ने फरमाया ख़ाला मां के दर्जे में होती है। (बुख़ारी)

यतीम की देखभाल या भरण पोषण का सबसे बेहतरीन तरीका यह है कि अनाथ को अपने परिवार का मिंबर बना लें, अपने बच्चों के साथ इसे भी अपनी औलाद समझ कर इसकी तालीम व तर्बियत पर ध्यान दें, इसकी ज़रूरतों को पूरी करें, इसकी पूरी तरह से देख भाल करें। दूसरा तरीक़ा यह है कि आंशिक मदद करें, अपनी ताकात के अनुसार यतीमों की मदद करें।

अगर रिश्तेदारों में कोई यतीम है तो वह हमारी मदद का ज़्यादा हक़दार है, हम उसकी देख भाल करें इससे डबल पुण्य मिलेगा एक रिश्तेदारी का पुण्य और एक नेकी करने का पुण्य। वह संस्थाए जहां पर अनाथ बच्चे, क्षात्र क्षात्राएं शिक्षाधीन हैं उनका सहयोग करें उनकी शिक्षा और प्रिशिक्षण में हिस्सा लें।

जुबान की हिफाज़त

मुहम्मद रिजवान आलम इस्लामी

यह एक हक़ीक़त है कि समाजी जिन्दगी में अधिकतर मुसीबतों की वजह इन्सान की जुबान होती है। जुबान की असावधानी घर के अन्दर और घर के बाहर इन्सान के लिये बेशुमार मसाइल (समस्याएं) खड़ी कर देती है। अगर इन्सान जुबान को कन्ट्रोल में रखे या कम से कम ऐसा करे कि नाजुक वक़्त में खामूश रहे तो वह यक़ीनी तौर पर अनुचित बातों से सुरक्षित रह सकता है।

संसार के सभी सुधारकों एवं चिंतकों ने जुबान को सावधानीपूर्वक स्तेमाल पर जोर दिया है। मिसाल के तौर पर गौतम बुद्ध जी का कथन है:

''जुबान हम को इसलिए दी गई कि हम एक दूसरे से सुगम बातें करें न कि एक दूसरे को दुख पहुंचाएं'' हिन्दी की कहावत है :

''तलवार के वार की अपेक्षा जुबान का वार ज्यादा गहरा होता है''।

हकीमों का कथन है :

''मूर्ख आदमी का दिल मुंह में होता है और अकलमन्द की जुबान दिल में''

ओरिड़न का कथन है :

''खाली दिमाग और कैंची की तरह चलती हुई जुबान एक दूसरे के करीबी दोस्त हैं।''

फ्रेन्कलन का कहना है :

''पांव की लग्जिश (फिसलन) के बाद संभला जा सकता है मगर जुबान के लग्जिश खाने के बाद संभलना मुश्किल और कठिन है।''

अरबी कहावत है :

''जाहिल की जुबान उसकी मालिक होती है और अकलमन्द की जुबान उसकी सेवक''

अफलातून ने कहा:

''अगर बात को देर तक सोच समझ कर मुंह से निकालो तो तुम कभी शर्मिन्दा नहीं होगे''

स्वीट नारीडयन का कहना है:

''अगर इन्सान के पास अच्छे बोल हों तो अच्छी शक्ल न होने की वजह से भी लोगों को अच्छा मालूम हो गा''

अरबी का कथन या उक्ति है:

''जो शख्स नापसन्दीदा बात कहेगा वह नापसन्दीदा बात सुनेगा '' (साभार मवाइजे हसना भाग ४)

इसी लिये मानवता के शिक्षक पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुबान के बारे में फरमाया:

''जो शख्स मुझे अपनी जुबान और शर्मगाह (गुप्तांग) की हिफाज़त की ज़मानत दे दे मैं उसके लिये स्वर्ग की जमानत लेता हूं'' (तिर्मिज़ी)

हदीस में आता है कि एक बार पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा किराम की मज्लिस में थे, अचानक अबू जहल आ गया, और उनके दर्मियान बैठते ही पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम को बुरा भला कहने लगा। सहाबा किराम खामूशी से उसकी बातों को सुनते

रहे और उसकी बदजुबानी (अपशब्द) को सहते रहे। जब उसकी बातें सहन से बाहर हो गईं तो अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अबू जहल की बातों का जवाब देना शुरू कर दिया और अबू जहल को बुरा भला कहने लगे। इतना होना था कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सभा से उठ खड़े हुए। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ पकड़ लिया और कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर हमसे क्या गलती हुई है कि आप सभा से उठ खड़े हुए? आप ने फरमाया जिस सभा में रहमत का फरिश्ता नहीं रहता वहां मैं कहां रह सकता हूं? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हमने समझा नहीं।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अबू बक्र अभी अभी अबू जहल तुम्हें बुरा भला कह रहा था और तुम खामूशी से उसकी बदजुबानियों को सुन रहे थे तो इस सभा में रहमत का एक फरिश्ता मौजूद था जो अबू जहल की बुरी बातों के बदले हम सब पर अल्लाह की रहमत भेज रहा था लेकिन जब तुमने अपने दुश्मन को बुरा भला कहने के लिये अपनी जुबान खोली तो रहमत का फरिश्ता यहां से चला गया।

जुबान का अनुचित स्तेमाल, गाली देना, ग़ीबत करना, दूसरों पर गलत आरोप लगाना, किसी को बुरे नाम से पुकारना, लांछन करना और एक दूसरे का मज़ाक उड़ाना यह सब बुरी आदतें हैं कुरआन और हदीस में इन बुराइयों की सख्त निन्दा की गई है।

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! कोई जमाअत दूसरी जमाअत से मसख़रापन न करे संभव है कि यह उससे बेहतर हो और न औरतें औरतों से, संभव है कि यह उनसे बेहतरा हों और आपस में एक दूसरे को ऐब न लगाओ और न किसी को बुरे लक़ब दो।'' (सूरे हुजुरात-११)

अरबी की उक्ति (मकूला) हैः

''मन ज-ह-का जुहिका'' अर्थात जो सिकी की हंसी उड़ाए गा उसकी भी हंसी उड़ाई जाएगी। आप किसी पर हंसें गे तो कल आप पर भी हंसा जाएगा। कुरआन ने सिखाया है कि आम लोगों से बातें करो तो मीठी जुबान से करो। फिर बात करने में गंभीरता और शान्त स्वभाव का ख्याल रखें, बुजुर्गों से बात का मौका आए तो अदब (शिष्टा) से करो।

जुबान की गलती समाज में इतनी फैली हुई है कि इन गलतियों का एहसास ही खतम होता जा रहा है, देखने में यह गलतियां मामूली नज़र आती हैं लेकिन हक़ीक़त में यह अत्यन्त हानिकारक हैं समझने वाला चाहे इसको मामूली ही क्यों न समझे।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या मैं तुम को बताऊं इन तमाम चीज़ों की जड़ और बुनियाद क्या है मुआज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा ज़रूर बताइये ऐ अल्लाह के पैग़म्बर आपने अपनी जुबान पकड़ ली और फरमाया जुबान को रोके रखो मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम जो कुछ बोलते हैं क्या इस पर भी पकड़

होगी? पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी मां तुम को गुम करे लोग अपनी जुबान की वजह से ही आग में मुंह के बल गिराए जाएंगे। (तिर्मिज़ी, हदीस का आंशिक भाग)

मुसनद अहमद में है बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक देहाती आया और कहा कि मुझे कोई ऐसा कर्म बता दीजिए जो मुझे जन्नत में ले जाए आप ने फरमाया गर्दनों को आज़ाद करो, दूध वाली उँटनी दूसरे को दूध पीने के लिये दो, रिश्ता नाता तोड़ने वाले से रिश्ता नाता जोड़ो, भूखे को खाना खिलाओ, प्यासे को पानी पिलाओ, लोगों से भली बात कहो और बुरी बातों से स्वयं को रोको। आखिर में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर तुम ऐसा न कर सको तो अपनी जुबान को रोको और भली बात के सिवा मुंह से कुछ न निकालो।

मुसनद अहमद की रिवायत में है कि एक बार पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि क्या मोमिन बुजदिल (कायर) हो सकता है? आप ने फरमाया हां फिर पूछा गया कि क्या मोमिन (मुसलमान) बख़ील हो सकता है? आपने फरमाया हां, फिर पूछा क्या मुसलमान झूठा हो सकता है? आप ने फरमाया नहीं।

हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि पैग़म्बर मुहम्मद की शिक्षाओं की रोशनी में जुबान की कितनी अहमियत है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

भदोही की प्रतिष्ठित शख़्सियत और प्रसिद्ध कवि एवं ताजिर अलहाज शराफत हुसैन वज़ीरी का इन्तेक़ाल

दिल्ली ३० नवम्बर २०१६

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अखबारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने भदोही की प्रतिष्ठित दीनी, मिल्ली व समाजी शख़्सियत, प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार और मश्हूर कालीन ताजिर अलहाज शराफत हुसैन वज़ीरी के इन्तेकाल पर गहरे रंज व गम का इजहार किया है और उनकी मौत को बड़ा दीनी, इल्मी, साहित्यिक, कौमी, मिल्ली और जमाअती ख़सारा क़रार दिया है।

उन्होंने कहा जनाब अलहाज शराफत हुसैन वज़ीरी साहब जिनका पिछली रात दो बजे दिल्ली के एम्स हास्पिटल में ८७ साल की आयु में इन्तेकाल हो गया, वह अत्यंत नेक, दीनदार, परहेज़गार, अच्छे स्वभाव वाले, शरीअत के पाबन्द, मुख़्लिस, और भदोही के प्रसिद्ध दीनी और तिजारती खानदान वज़ीरी के सरपरस्त थे, दुआ और अज़कार का बहुत एहतमाम फरमाते थे और रिश्तेदारों, दोस्त अहबाब, ओलमा किराम और अवाम व खवास के लिये पाबन्दी से दुआएं करते थे। ऐसे वक़्त में जब कि आम लोगों की ग़फलत की यह हालत है कि अपने आपको भुला दिया है और अपने लिये दुआ की तौफीक नहीं मिलती, अपने रिश्तेदारों और दोस्त अहबाब के लिये दुआ करना तो दूर की बात है लेकिन शराफत हुसैन वज़ीरी की शख़्सियत इस हवाले से प्रतिष्ठित और प्रमुख थी।

अमीरे मोहतरम ने कहा कि अलहाज वजीरी साहब उर्दू भाषा व साहित्य के माहिर और अनुभवी कवि थे, उनका कावि उपनाम ''रोनक'' था। उनका कविता संग्रह ''एहसास की खुश्बू'' प्रकाशित हो चुका है, वह इस्लामी विचार पर आधारित कविताएं कहते थे खास तौर से नअ्त की बारीकी को भली भांति निभाते थे, उनकी नअ्त मुहब्बते रसूल की प्रतीक है।

शराफत वज़ीरी साहब आखिरी उमर में भी जमाअती कामों से बड़ी दिलचस्पी रखते थे। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान खास तौर से मुझ से बड़ी मुहब्बत रखते और दुआओं में याद रखते थे। उन्होंने अपनी औलाद की दीनी तर्बियत की यही वजह है कि सब उच्च शिक्षा और तिजारती मसरूफियात के बावजूद दीनी व मिल्ली कामों में हमेशा आगे आगे रहते हैं। अलहाज शराफत वज़ीरी साहब इधर कुछ दिनों से बीमार थे उनका कई प्राइवेट स्पतालों के अलावा एम्स में भी एलाज हुआ, इस दौरान आपके सभी लड़के, रिश्ते नाते दार मुकम्मल तौर पर देख भाल में लगे रहे लेकिन मौत का वक़्त निश्चित है ३० नवम्बर २०१६ को अल्लाह को प्यारे हो गए।

पसमांदगान में नौ बेटे अरशद वज़ीरी, जनाब नजमी वजीरी जज दिल्ली हाई कोर्ट, जनाब फरहत वजीरी, जनाब इश्रत वजीरी, जनाब इन्तेखाब वजीरी, जनाब फीरोज़ वजीरी, जनाब अनीस वजीरी, जनाब ज़िया वजीरी, इकलौती बेटी, भतीजे और, पोते पोतियां और निवासे, निवासियां हैं। अल्लाह उनकी मग़्फिरत फरमाए, जन्नतुल फिरदौस दे, पसमांदगान खास तौर से साहबज़ादे अरशद वजीरी साहब और इनके आठों भाइयों, इकलौती बेटी, दामाद, भतीजों, और परिवार के अन्य सदस्यों को सबरे जमील दे और जमाअत को उनका अच्छा विकल्प दे। आमीन

प्रेस रिलीज के मुताबिक मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अन्य जिम्मेदारान व सदस्यों ने भी उनके परिवार वालों से ताज़ियत की है और उनकी मग्फिरत के लिये दुआ की है। अमीरे मोहतरम जनाज़े में शिर्कत और ताज़ियत के लिये भदोही रवाना हो चुके हैं। (जरीदा तर्जुमान १६-३१-२०१६ में प्रकाशिकत प्रेस रिलीज़ का सारांश)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ को सदमा

८ जनवरी २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अखबारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदीस सलफी ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष अल हाज वकील परवेज़ के बड़े बहनोई जनाब मुहम्मद इब्राहीम साहब के इन्तेक़ाल पर गहरे रंज व ग़म का इज़हार किया है और कहा है कि वह बहुत नेक, मिलनसार, चरित्रवान, और नमाज़ रोज़े के पाबन्द थे, जमाअती और दीनी कामों से गहरी दिलचस्पी रखते थे और प्रोग्रामों में सक्रियता के साथ शरीक होते थे। अल्लाह उनकी मग़्फिरत फरमाए, जन्नतुल फिरदौस में जगह दे, पसमांदगान ख़ास तौर से उनके परिवार वालों, रिश्तेदारों को सब्र अता करे। प्रेस रिलीज़ के मुताबिक़ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान खास तौर से अमीरे मोहतरम से बड़ी मुहब्बत करते थे और जब भी अमीरे मोहतरम का नागपुर जाना होता था तो वह ज़रूर मिलने आते थे, जमीअत की गतिविधियों के बारे में जान कर खुश होते और बड़ी दुआएं देते थे। एक महीने पहले भी नागपुर के सफर में अमीर मोहतरम से नागपुर में लम्बी मुलाक़ात रही थी। उन्होंने भरपूर जिन्दगी गुज़ारी और ६ जनवरी २०२० को लगभग आठ बजे रात को आबाई वतन (पैतृकभूमि) नागपुर में ६० साल की उमर में इन्तेकाल हो गया। ''इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन'' कल जुहर की नमाज़ के बाद मर्कज़ी मुस्लिम क़ब्रस्तान नागपुर में उनकी तदफीन हुई। जनाजे की नमाज़ में बड़ी तादाद में लोगों ने शिर्कत की। पसमांदगान में दो लड़के और लड़कियां, पोते पोतियां और निवासे निवासियां हैं।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव, अन्य जिम्मेदारान, कार्यकर्ताओं ने अलहाज परवेज़ साहब और मरहूम के अन्य पसमांदगान से हार्दिक शोक प्रकट की है और उनकी मग्फिरत और दर्जात की बुलन्दी के लिये दुआ की है।

❑ ❑ ❑

जमाअती ख़बर

मर्कजी जमीअत के प्रतिनिधिमण्डल का दौरा

जामिया अल हुदा अल इस्लामिया में स्वागत प्रोग्राम से संबोधित करते हुए मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि शिक्षा के प्रभावी होने के लिये ज़रूरी है कि अध्यापकों में रूहानियत पाई जाए इसलिये कि इस का संबन्ध क्षात्रों की ऐसी तर्बियत (प्रशिक्षण) से है कि इस के बगैर तालीम का कोई अर्थ नहीं बनता बल्कि शिक्षा प्रशिक्षण के बिना बेमाना रह जाती है और अपना असर खो देती है। अमीरे मोहतरम ने मुसलमानों की शैक्षणिक स्थिति पर अफससोस का इज़हार किया।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने अपने संबोधन में कहा कि मैंने हिन्दुस्तान में बहुत से मदर्से और स्कूल देखे लेकिन यहां पर जो दीनी और आधुनिक शिक्षा का सौन्दर्य और कामयाब समन्वय है वह कहीं और बहुत कम देखा गया।

मर्कज़ी जमीअत के खाज़िन अलहाज वकील परवेज़ ने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि कोई कौम उस वक़्त तक तरक़्की नहीं कर सकती जब तक कि वह अपने अध्यापकों का सम्मान न करे। उन्होंने कहा कि किसी घर का कोई व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर लेता है तो इसका फायदा उसकी जात के साथ सिमट कर रह जाता है लेकिन बच्चियों का शिक्षित होना पूरी नस्ल के शिक्षित होने की जमानत बन जाता है।

जामिया के डायरेक्टर मौलाना जकी मदनी ने मेहमानों का स्वागत और शुक्रिया अदा किया। इस प्रोग्राम की शुरूआत कुरआन की तिलावत से हुई। (अबू अरीबा तैमी)

बजरडीहा वाराणसी में दीने रहमत कांफ्रेन्स

जमीअतुश शुब्बान अल मुस्लिमीन वाराणसी की जानिब से २४ नवम्बर २०१९ को बजरडीहा में आयोजित एक दिवसीय दीने रहमत कांफ्रेन्स से संबोधित करते हुए मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली सलफी ने कहा कि इस्लाम दीने रहमत है जो पूरी दुनिया के लिये सरासर रहमत है। इस्लाम धर्म में जानवरों के साथ भी दया करूणा का व्यवहार का हुक्म दिया गया है यही वजह है कि एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने की वजह से एक शख्स जन्नत का पात्र बन जाता है जबकि एक जानवर पर जुल्म की वजह से जहन्नम में चला जाता है।

मर्कज़ी जमीअत के खाज़िन अल हाज वकील परवेज़ ने मुसलमानों के मौजूदा हालात और तालीमी कमी पर रोशनी डालते हुए कहा कि तालीमी चिराग को हमारे ओलमा किराम अपने प्रयासों और पाठशालाओं से रोशन किये हुए हैं जहां पर दीनी तालीम के साथ आधुनिक शिक्षा दी जा रही है।

जमीअतुश शुब्बान के डायरेक्टर मौलाना मुहम्मद जुनैद मक्की ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि इस्लाम संसार की तमाम चीज़ों के लिये रहमत का पैगाम देता है। इस लिये इस्लाम की रहमत के पैगाम को आम किया जाए ताकि इन्सानों के बीच प्यार मुहब्बत, और अम्न व शान्ति का माहौल पैदा हो।

इस कांफ्रेन्स से मौलाना अब्दुल गफ्फार सलफी, मौलाना खुर्शीद आलम मदनी पटना और मौलाना जरजीस ने भी खिताब किया। इस कांफ्रेन्स की शुरूआत कुरआन की तिलावत से हुई जबकि कांफ्रेन्स का संचालन हाफिज़ निसार अहमद ने किया। (जरीदा तर्जुमान १६-३१ दिसम्बर २०१६)

एक दिवसीय समाज सुधारक कांफ्रेन्स

७ दिसम्बर २०१६ को नूर महल नीली कप्पम जिला कडलोर में एक शानदार दीनी व इस्लाही कांफ्रेन्स आयोजित हुई जिसका आरंभ हाफिज़ जहांगीर की तिलावते कुरआन से हुआ। मौलाना अब्दुल अलीम उमरी, मौलाना सदाक़त उमरी, मुफती उमर शरीफ कासिमी, मोलवी रियाजुददीन उमरी, डा० आर के नूर मुहम्मद उमरी मदनी, शैख अनीसुर्रहमान उमरी मदनी, मौलाना अब्दुल्लाह हैदराबादी उमरी ने खिताब किया।

कुरआन इंसान से क्या कहता है

संदेष्टा मुहम्मद को अल्लाह की तरफ से एक किताब मिली है जिसका नाम कुरआन है उसके पढ़ने में बड़ी बरकत है एक एक अक्षर पर दस दस पुण्य (नेकियां) मिलती हैं इसमें अल्लाह की बातें लिखी हुयी हैं जो उसकी बातों को मानता है वह मुसलमान है।

कुरआन शरीफ में लिखा है कि आसमान जमीन हवा पानी सूरज चांद सितारे आदमी जानदार बेजान सब चीजों को अल्लाह ही ने पैदा किया है वही रोज़ी देता है, सब उसके मुहताज हैं वह किसी का मुहताज नहीं। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं जो उनका कहना मानेगा अच्छे अच्छे काम करेगा, बुरे कामों से बचेगा अल्लाह उससे खुश होगा और मरने के बाद उसको बड़े बड़े इंआम देगा।

कुरआन में लिखा में है कि गरीबों यतीमों की मदद, करो, नमाज़ पढ़ो, रोजा रखो, इंसानों पर रहम करो, जमीन में शान्ति फैलाओ एक दूसरे के साथ इंसाफ करो, दूसरे के माल को न हड़पो, कमजोर को न सताओ, छोटों से प्यारा करो, बड़ों का सम्मान करो, औरतों को उनका अधिकार दो, मां बाप के अधिकार को निभाओ, मजलूम की मदद करो, इत्यादि।

इसके अलावा कुर्आन में लिखा है कि यह इंसान जो इस दुनिया में रह रहा है उसे एक न एक दिन मरना है और महापरलय के दिन अपने किये का हिसाब देना होगा।

इसके अलावा कुर्आन में लिखा है कि यह इंसान जो इस दुनिया में रह रहा है उसे एक न एक दिन मरना है और महापरलय के दिन अपने किये का हिसाब देना होगा।

कुरआन के बारे में विस्तृत जानकारी के लिये मकतबा तर्जुमान ४११६ उर्दू बाजार से उर्दू हिन्दी और अंग्रेजी में किताब पर्याप्त है, यहां से तीनों भाषाओं में कुरआन का परिचय से संबन्धित किताब हासिल की जा सकती है।

प्रेस रिलीज़

लोकतंत्र, संविधान और देश की अखंडता की सुरक्षा देशवासियों की संयुक्त जिम्मेदारी:

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

दिल्ली १४ दिसंबर २०१६

नागरिकता संशोधन बिल (सी.ए.बी) के पास होने के बाद प्रिय देश एक बार फिर सख्त व मुश्किलतरीन हालात से दोचार है। बिल के खिलाफ जगह-जगह प्रदर्शन हो रहे हैं और अधिकृत होने के ख़दशात बढ़ते जा रहे हैं। नए नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ पूरे देश में गम व गुस्सा, प्रदर्शन और सख्त चिंता और बेचैनी है और इसे सभी मज़हब व समुदाय, देश के इन्साफ पसन्द अवाम व ख़वास और विभिन्न धार्मिक व राजनीतिक दृष्टिकोण के वाहक प्रिय देश के अन्दर हिन्दू मुस्लिम मुनाफिरत और भेदभाव को बढ़ावा देने और खून आशाम (रक्त पिपासु) दो राष्ट्रीय दृष्टिकोण को फिर से बढ़ावा देने और देश को एक बार फिर तक़सीम करने वाला बता रहे हैं। साथ ही देश व मिल्लत पर इस के बुरे परिणाम होने की तरफ इशारे भी किए जा रहे हैं। और खुले तौर पर इसकी निन्दा और विरोध भी हो रहा है क्योंकि यह कानून संविधान की कई बुनियादी दफआत और गंगा-जमुनी सांस्कृतिक रिवायात के खिलाफ है। उपर्युक्त कानून ने जहां देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक को मानसिक दुख और बेचैनी में लिप्त कर दिया है वहीं इस देश के हज़ारों, लाखों गैर मुस्लिम इन्साफ पसन्द बुद्धिजीवियों, ज्ञानियों और अम्न पसन्द शहरी भी सख्त चिंता में लिप्त हैं और इसे लोकतंत्र, न्याय और संविधान के खिलाफ करार दे रहे हैं। यह बिल जो बजाहिर मुसलमानों के खिलाफ है वह तो इसका विरोध कर ही रहे हैं, देश के इन्साफ पसन्द और लोकतंत्र पर विश्वास रखने वाले और भारत के संविधान की पासदारी करने वाले गैर मुस्लिम भाई भी इसकी सख्त निन्दा और विरोध में आगे आगे हैं।

इस सिलसिले में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का दृष्टिकोण यह है कि हुकूमत को इस विवादास्पद कानून पर पुनरावृत्ति करनी चाहिए क्योंकि इस बिल की वजह से देश के लोकतंत्र और संविधान को धचका लगा है और इसकी छवि दाग़दार हुई है। नागरिकता बिल से मुसलमानों को खारिज करना सरासर ना इन्साफी है क्योंकि वह इस देश के निमार्ण व तरक़्क़ी में बराबर के साझीदार रहे हैं और संवैधानिक और इतिहासिक एतबार से बराबर के शेहरी हैं इस बिल से बुनियादी अधिकार की खिलाफवर्जी भी होती है। बहर हाल यह कानून

किसी भी तरह न देश के हित में है और न देशवासियों के हक़ में। इसी तरह मिल्ली संगठनों को भय और निराशा की नफसियात से निकल कर तमाम दीनी जमाअतों और देश बन्धुओं के साथ मिल बैठ कर उचित एवं प्रभावी कार्यप्रणाली तैयार करना चाहिए ताकि इस कानून के बुरे परिणाम से देशवासियों को बचाया जा सके। वह संविधान में दिए गये अधिकारों की रोशनी में शान्तिपूर्ण तरीक़े से सन्तुलन के साथ ऐसा इक़दाम करें कि देश के अन्दर किसी तरह के भेदभाव चिंता, बेचैनी और हिंसा व अशान्ति को राह न मिल सके और न ही कोई ख़ास कम्यूनिटी इसकी ज़द में आ सके या लाई जा सके। वास्तव में इस मसले को किसी धर्म और मजहब की बुनियाद पर देखना किसी भी तरह देश और देशवासियें के हक़ में नहीं है, इसलिये एकजुटता और संयुक्त तौर पर ही इसका सामना करने की ज़रूरत है इसलिये तमाम देशवासियों खास तौर से मुसलमानों से दर्दमन्दाना अपील है कि सी ए बी के खिलाफ अभियान को केवल मुसलमानों के साथ जोड़ कर न देखें बल्कि संविधान की बहाली और उसकी हिफाज़त के लिये हर इन्साफ पसन्द को आगे आ कर अत्यंत गंभीरता, शान्त स्वभाव, अकलमन्दी व होशियारी और शान्तिपूर्ण और संवैधानिक तरीक़े से एकजुटता और संयुक्त तौर पर अपनी आवाज़ को बुलन्द करने की ज़रूरत है। किसी तरह की जजबातियत या कानून को हाथ में लेना देश और देश बन्धुओं और विशेष रूप से मुसलमानों के हित में कदापि नहीं है। दोनों सदनों से बिल पास होने के बाद भी हमारे लिये अदालत के दरवाज़े खुले हुए हैं और न्यायपालिक से उम्मीद है कि हमें इन्साफ मिलेगा और इन्साफ पसन्द बिरादरी हमारे साथ आए गी।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की हमेशा की तरह इस मामले में भी यह कोशिश और इच्छा थी कि तमाम मुस्लि संगठनों के संयुक्त फैसले के ज़रिये इन्साफ पसन्द गैर मुस्लिम जमाअतों और शख्सियतों को लेकर इस संकट और चिंताजनक हालात से निकलने और निमटने की कोशिश की जाती लेकिन अफसोस कि अब तक बड़े पैमाने पर कोई कार्य प्राणली न बन सकी। फिर भी हम मायूस नहीं हैं बल्कि पुरउम्मीद हैं कि सारे संगठन इस सिलसिले में एकजुट हो कर शान्तिपूर्ण और संवैधानिक तौर पर पूरी कुव्वत से मामले का तार्किक और न्यायोचित परिणाम हासिल करने में कामयाब होंगे। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द हिन्दुस्तान के मुसलमानों से अपील करती है कि वह अपने चरित्र व आदात और व्यवहार के अन्दर भी तबदीली लाएं और हर प्रकार की संवैधानिक कोशिश के साथ विशेष दुआ, तौबा और इस्तेग्फार का एहतमाम करें और व्यक्तगत और सामूहिक तौर पर जमाअती, मुल्की और मिल्ली मामलात में अल्लाह के हुकूक और बन्दों के हुकूक़ की अदायगी के अलावा अल्लाह की रहमत और मदद के तलबगार हों क्योंकि वही हक़ीक़ी मददगार और काम बनाने वाला है। (पाक्षिक जरीदा तर्जुमान, १-१५ जनवरी २०२०)

अच्छे कर्म से हालात बदलते हैं

नौशाद अहमद

इस वक़्त हर इन्सान सही दिशा की तलाश में है, दुनिया का कोई भी इन्सान ऐसा नहीं है जो किसी न किसी समस्या से जूझ न रहा हो, हर तरफ दुख की स्थिति है, लेकिन इसके बावजूद सही दिशा ढूढ़ने की कोशिश नहीं हो रही है, समस्या को दूर करने के लिये वह तरीका नहीं बताया जा रहा है जो उसे शाश्वत सुख प्रदान कर सके।

बुरे कर्म का अन्जाम हमेशा बुरा ही हुआ है इतिहास बताता है कि मानवता विरोधी लोगों को देर सवरे उनके कुकर्मों की सजा मिली है। सरकश कौमों को अल्लाह ने जो सजा दी है उसका उल्लेख कुरआन में विभिन्न जगहों पर मौजूद है, जिन लोगों ने गलत रास्ता अपनाया, कमजोरों, बेसहारा लोगों को सताया तो उनको चेतावनी को नज़र अन्दाज़ करने पर अपने गलत कर्मों का अंजाम भुगतना पड़ा, कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उनसे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुके हैं जिन को हमने दुनिया में ऐसी कुव्वत दी थी कि तुम को वह कुव्वत नहीं दी और हमने उन पर खूब बारिशें बरसाईं और हमने उनके नीचे से नहरें जारी कीं, फिर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला और उनके बाद दूसरी जमाअतों को पैदा किया '' (सूरे अंआम-६)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

'' फिर तो हर एक को हमने उसके गुनाह के वबाल में गिरफतार कर लिया, उनमें से बाज़ पर हमने पत्थरों का मेंह बरसाया और उनमें से बाज़ को ज़ोर आवर सख्त आवाज़ ने दबोच लिया और उनमें से बाज़ को हमने ज़मीन में धँसा दिया और उनमें से बाज को हमने डुबो दिया अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर जुल्म करे बल्कि यही लोग अपनी जानों पर जुल्म करते थे।'' (सूरे अंकबूत-४०)

फिरऔन ने अपनी ताक़त का अहंकार दिखाया, बनी इस्राईल कौम को सताया, गुलाम बनाया, बनी इस्राईल को आज़ाद करने से इन्कार किया तो अल्लाह तआला ने फिरऔन और उसकी पूरी फौज को कुलजुम समुद्र में डुबा दिया।

जुल्म करना अल्लाह की शान के खिलाफ है लेकिन इतिहास बताता है कि जिन कौमों पर भी अजाब आया या उन्हें हलाक व बर्बाद किया गया तो उनके पाप और अहंकार की वजह से, इसका मतलब यह हुआ कि कौमें अपने पाप की वजह से हलाक की गईं।

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''खुश्की और तरी (थल और जल) में लोगों की बद आलिमों के सबब फसाद फैल गया। इसलिये कि उन्हें उनके बाज़ करतूतों का फल अल्लाह तआला चखा दे (बहुत) मुमकिन है कि वह बाज आ जाएं'' (सूरे रूम-४१)

प्राकृतिक आपदा अल्लाह की तरफ से बतौर सज़ा नाज़िल होती है जैसे अकाल, भय, सैलाब और मौत की अधिकता। जब इन्सान अपने

पालनहार की नाफ़रमानी करने लगता है तो बुरे कर्म के बदले में अम्न व सुकून खतम हो जाता है, भय का वातावरण पैदा हो जाता है और बाज दफा प्राकृतिक आपदा अवतरित होती है जिसका मक़सद यह होता है कि इन्सान अपने कुकर्म और पाप से बाज़ आ जाएं, तौबा करें, उससे क्षमायाचना करें। इसके विपरीत जिस जगह और समाज में न्याय हो, लोग अपने पालनहार के नियमों और सिद्धांतों का पालन करते हों, समाज के लोग स्वार्थ से पवित्र हों, शासक अपनी प्रजा का ख्याल रखते हों तो ऐसे में अल्लाह की तरफ से सुख अमन व सुकून और खैर व बरकत नाज़िल होती है।

एक हदीस में आया है कि ''ज़मीन में एक सज़ा को लागू करना (न्याय करना) वहां के इन्सानों के लिये चालीस रोज़ की बारिश से बेहतर है'' (सुनन नेसई) इसी तरह पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब एक बदकार (पापी) आदमी मर जाता है तो बन्दे (इन्सान) ही इससे राहत नहीं महसूस करते शहर, पेड़ पौधे और जानवर भी सुख और आराम पाते हैं। (सहीह बुखारी)

अल्लाह ने हर इन्सान को रास्ता बता दिया है, सहीह गलत के बारे में स्पष्ट कर दिया है, अगर कोई सहीह की तरफ जाने की कोशिश करे गा तो भलाई में रहेगा और जो गलत दिशा में जाने का प्रयास करेगा वह सरासर नुकसान में रहेगा। इन्सान अपनी बुरी हालत का खुद ही जिम्मेदार होता है लेकिन अधिकतर लोग अपनी तकदीर को कोसते हैं, जबकि दुनिया का कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों की वजह से सुखी और दुखी होता है। दुख इन्सान के पैदा किए हुए हैं, इन्सान को अच्छे कर्म करने का हुक्म दिया गया है लेकिन उसका कर्म इसके विपरीत होता है।

हालात कर्मों के आधार पर बदलते हैं अगर कोई यह सोचता है कि हालात स्वयं ही बदल जाएं गे तो यह बहुत बड़ी भूल है। हर इन्सान को अपने कर्मों के बारे में आकलन करना चाहिए कि वह सही दिशा में जा रहा या गलत दिशा में जा रहा है। हालात अच्छे कर्मों से बदलते हैं, ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने कर्मों को सुधारें, अच्छा कर्म करें अच्छा सोचें, अपने पालनहार के बताए गये तरीक़े के मुताबिज अमल करें।

हालात इन्शाअल्लाह हालात बदल जाएंगे, तौबा, और क्षमा याचना करें, समाज के लोगों के जो अधिकार हैं, उनको अदा करें, दूसरों का ख्याल रखें, दूसरों को दुख न पहुंचाएं, हमेशा भला ही सोचें तो हालात बदल सकते हैं वर्ना कुकर्म के आधार पर हालात नहीं बदलते हैं, कुरआन का यह उपदेश याद रखना चाहिए।

''(यह भी क्या कमने महरबानी है) कि अल्लाह तआला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक वह खुद अपनी हाजत न बदले ओर जब अल्लाह किसी क़ौम के बारे में बुराई चाहता है तो वह किसी प्रकार नहीं टलती (उस को कोई टालने वाला नहीं) और न अल्लाह के अलावा उनका कोई वली (देख रेख करने वाला) है सूरे रअूद-११ जो कौम अपनी हालत खुद से नहीं बदलती अल्लाह भी उसकी हालत को सुधारने की कोशिश नहीं करता इस आयत में अल्लाह के इसी नियम को बयान किया गया है।

❑ ❑ ❑

प्रेस रिलीज़

जवाहर लाल नेहरू यूनीवर्सिटी के कैम्पस में क्षात्रों और अध्यापकों पर हिंसक हमला निन्दनीय :

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली ६ जनवरी २०२०

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मोहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने पिछले कल केन्द्रीय पाठशाला जवाहर लाल नेहरू यूनीवर्सिटी के कैम्पस में लाठी और डंडों से लैस नक़ाब पोश हमलावरों के ज़रिए किए गए क्षात्रों और अध्यापकों पर अफसोसनाक हिंसक हमले की निन्दा की है और इसे न सिर्फ जे.एन.यू जैसी शैक्षणिक संस्थाओं बल्कि प्रिय देश की गंगा-जमुनी सभ्यता एवं मूल्यों के मनाफी (प्रतिकूल) और अनेकता में एकता वाली रिवायत के वाहक देश और महान शैक्षणिक और सांस्कृतिक स्थल और केन्द्र को नुक़सान पहुंचाने की कोशिश और उसकी पहचान पर हमला करार दिया है और कहा है कि हमारी उच्च शैक्षणिक संस्थाएं जो देश की रीढ़ की हडडी और बहुमूल्य पूंजी हैं और जहां देश का भविष्य परवान चढ़ता है, इनमें इस तरह के शर्मनाक वाकेआत का होना अत्यंत अफसोसनाक और चिंता का क्षण है। सरकार, यूनीवर्सिटी प्रशासन को चाहिए कि इस निन्दित वाक़ेआ की फौरन निष्पक्ष जांच करके असल अपराधियों को सजा दे। यूनीवर्सिटी कैम्पस में अम्न व शान्ति को सुनिश्चित बनाये और तालीमी माहौल को बहाल करे और सरकार ने इस सिलसिले में जो इक़दामात किए हैं उनको और ज़्यादा प्रभावी और स्थिर बनाने पर उन्होंने ज़ोर दिया है।

अमीर मोहतरम ने कहा कि देश के अन्दर हालात दिन ब दिन ख़राब होते जा रहे हैं और अजीब तरह की अनारकी की स्थिति पैदा होती जा रही है ऐसे में हुकूमत, प्रशासन और अवाम सब को गंभीरता के साथ हालात पर काबू पाने के लिये संयुक्त प्रयास करना चाहिए ताकि फिर इस तरह के अफसोसनाक वाक्ेआत न हों और सब की इ़ज्ज़त आबरू और जान माल सुरक्षित रहे।

अमीरे मोहतरम ने अपने बयान में इस हमले में ज़ख़्मी होने वाले अध्यापकों और क्षात्रों से हमदर्दी और सद्भावना व्यक्त की है और हर हाल में अम्न व कानून को बहाल रखने की अपील की है।

(पाक्षिक जरीदा तर्जुमान १६-३१ जनवरी २०२०)

❑ ❑ ❑